|  |
| --- |
| 25. Dezember |
| **Hochfest der Geburt des Herrn** |
| **1. Weihnachtstag – Am Morgen - Hirtenamt** |
| Erste Lesung: Jes 62,11-12; Zweite Lesung: Tit 3,4-7; Evangelium.: Lk 2,15-20 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 728 | Heiligste Nacht |
|  | GL 735 | O selige Nacht |
|  | GL 732, 1-3 | Auf, Christen, singt festliche Lieder |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 159 | Licht, das uns erschien |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 245, 1-3 | Menschen, die ihr wart verloren |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 97, 1 u. 6.11-12 |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 635, 3 | Heute ist uns der Heiland geboren |
|  | oder |  |
|  | GL 736, 1+3 | Singen wir mit Fröhlichkeit |
|  | GL 250, 2-5 | Sagt mir, Hirten, wem die Freude |
|  |  |  |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 244 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Verherrlicht ist Gott in der Höhe,* |
|  | *und auf Erden ist Friede bei den Menschen seiner Gnade.* |
|  |  |
| Credo: | GL 586, 2  | Das große Glaubensbekenntnis |
|  | GL 247, 1-4  | Lobt Gott, ihr Christen  |
|  | GL 737, 1-3 | Du Weltenheiland |
|  | GL 731 | Zur Welt herab |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 241, 1-4 | Nun freut euch, ihr Christen |
|  | GL 246 | Als ich bei meinen Schafen wacht |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 380, 3 | Heilig, Herr Gott Zebaoth |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 239, 1-3 | Zu Bethlehem geboren |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 237, 1-6 | Vom Himmel hoch |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 238, 1-3 | O du fröhliche |